ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८ १२५

बुलेटिन संख्या-७
दिनांक-मंगलवार,२२ जनवरी,२०१९

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २३.७ एवं ७.७ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९० सुबह में एवं दोपहर में ६४ प्रतिशत, हवा की औसत गति १.५ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.४ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ५.७ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १०.९ एवं दोपहर में २०.० डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा, सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२३ से २७ जनवरी, २०१९)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २३ से २७ जनवरी, २०१९ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में गरज वाले बादल बनने की संभावना है तथा इसके प्रभाव से अगले २४ से ७२ घंटे के अन्दर हल्की वर्षा अनेक स्थानों पर होने की संभावना है। इसका प्रभाव बिहार के उत्तर-पश्चिम जिलो तथा तराई के क्षेत्रों में अधिक होने का अनुमान है। हलाकि, मैदानी भागों के जिलों में भी इस मौसमीय सिस्टम का असर देखा जा सकता है।
- अधिकतम तापमान २१ से २३ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान ७ से ९ डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन ५ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब ८५ से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ५५ से ६५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- कृषक भाईयों को सलाह दी जाती है कि पूर्वानुमान की अवधि में हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्यो में सर्तकता बरतें। फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें। खड़ी फसलों जैसे-गेहूँ, मक्का, आलू, मटर, चना एवं सब्जिओं की फसल में इस समय सिंचाई न करें, इसके लिए इंतजार कर सकतें हैं। हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की फिलहाल खुदाई न करें। खुदाई की गई हल्दी एवं ओल की कंद को सुरक्षित स्थानों पर भंडारित कर लें।
- समय से बोयी गई गेहूँ की ४० से ५० दिनों की फसल में दूसरी सिंचाई एवं अगात बोई गई गेहूँ की फसल जो ६० से ६५ दिनों की हो गई है, उसमें तीसरी सिंचाई के लिए इंतजार कर सकतें हैं।
- पिछात मक्का की फसल जो ५० से ६० दिनों की हो गयी हो, उसमें ५० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ एवं अच्छी उपज के लिए जुताई से पूर्व खेतों में प्रति हेक्टेयर १५-२० टन गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट का व्यवहार करें। पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली, मटर, बैंगन, टमाटर एवं मिर्च फसलों में निराई-गुराई करें। इन फसलों में कीट एवं रोग-व्याधि से बचाव हेतु नियमित रुप से देख-रेख करें।
- आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। यह कीट आलू में काफी हानी पहुचाता है। फसल की शुरुआती अवस्था में यह कीट रात्री बेला में जमीन की सतह से पौधे को काट डालता है। फसल के बाद की अवस्था में यह पौधे की शाखाओं एवं पत्तियों को काटता है। कंद बनने की अवस्था में यह कंद को खाता है। इस कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- इस समय आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना अधिक रहती है। अतः किसान भाई अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में जहाँ दीमक की समस्या हो, क्लोरपाईरिफॉस २० ई०सी० @ २.५ मी०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने एवं उसके आस-पास की मिट्टी में छिड़काव करने से दीमक की उग्रता में कमी आती है। मधुआ एवं दहिया कीटों का प्रकोप कम करने के लिए वृक्षों में इमिडाक्लोप्रीड १७.८ एस०एल० अथवा साइपरमेथ्रीन १० ई०सी०@१.० मी०ली०/ली० पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें। घुलनशील गंधक (सल्फर) ८० डब्लू०पी०@ २ ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल कर पत्तियों पर समान रुप छिड़काव करने से आने वाले समय में पौउड्री मिल्डेव की उग्रता में कमी आती है।
- चारे की फसलें जैसे-जई, बरसीम एवं लूसर्न की कटाई २५-३० दिनों के अन्तर पर करें। प्रत्येक कटनी के बाद सिंचाई करें। सिंचाई के बाद खेतों में १० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टर की दर से उपरिवेशन करें।
- दुधारु पशुओं में डेगनाला बीमारी की संभावना नवम्बर से फरवरी माह के बीच रहती है। यह बीमारी पशुओं को फफुंदयुक्त पुआल खाने से होता है। फफुंदयुक्त पुआल खाने से पशुओं में सेलेनियम विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। इस बीमारी के लक्षण में दुधारु पशुओं के थन एवं पूंछ का सड़ना पाया गया है। इससे बचाव के लिए १.० ग्राम सोडियम हाईड्रक्साइड को ४०० मि०ली० पानी में घोल कर उसे २० किलोग्राम पुआल पर छिड़काव कर पशुओं को खिलाये। साथ में २०० ग्राम तीसी तथा २०० ग्राम छोवा या गुड़ मिलावे। इस बीमारी के उपचार के लिए बीमार पशुओ को पेन्टासल्फ दवा ६० ग्राम पहले दिन खिलाये तथा उसके बाद १५ दिनों तक ३० ग्राम खिलाये।

आज का अधिकतम तापमानः २५.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.३ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः ८.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य के बराबर

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी